ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	DTVF/19(JS)–ESY-**E1**	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: Ravi Kumar Sihag **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19 B-1

Center & Date: Delhi, 21/07/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 1111762

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: 125 × 2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: 125 × 2 = 250

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज़्यादा अवसरों की असमानता है।

   Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.

2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।

   To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.

3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।

   The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.

4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

   If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

खंड–B / SECTION –B

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।

   "The unexamined life is not worth living".

2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।

   The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.

3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज़्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।

   The hands that serve are holier than the lips that pray.

4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

   Religion without ethics is like a body without soul.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज़्यादा अवसरों की असमानता है।

Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.

2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।

To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.

3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।

The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.

4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

"अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज्यादा अवसरों की असमानता है।"

"हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न..... समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक -न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा व अवसरों की समता तथा उन सब में राष्ट्र की एकता व

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अखण्डता सुनिश्चित करने वाली ---
संविधान को अधिनियमित व आत्मार्पित करते हैं।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भारतीय संविधान की प्रस्तावना पर यदि एक नज़र डाले तो हमें पता चलता है कि इसमें नागरिकों को संविधान द्वारा प्रदान किये जाने वाले सभी लाभों व उपादानों का एक खाका प्रस्तुत किया गया है। जहाँ तक समता की बात है तो इसमें प्रतिष्ठा व अवसरों की समता का ज़िक्र किया गया है तो न्याय की संकल्पना भी बहुआयामी है अर्थात. सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय का मिश्रण। शायद हमारे संविधान के निर्माताओं ने अच्छी तरह समझा था कि केवल आर्थिक असमानता या अन्याय का शमन कर देने से जो आदर्श राज्य बनाने का स्वप्न वे देख रहे थे, पूर्ण नहीं हो पाता।

इसी क्रम में अब यदि असमानता की बात करें तो इसे श्रेणीमूलक संकल्पना के रूप में समझा जा सकता है अर्थात. किसी के पास आधिक्य तो किसी के पास

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

वंचना की स्थिति का होना। किन्तु, इसे केवल धन दौलत के नज़रिये से देखना आँख दबाकर देखने के समान है क्योंकि यदि अवसरों के प्रकारों का विवेचन करें तो इसमें आर्थिक अवसर भी आयेंगे और सामाजिक - राजनैतिक - सांस्कृतिक भी। परीक्षण केवल इस बात का होना चाहिये कि इन सभी प्रकारों का अनुपात क्या है? क्या आर्थिक अवसर सभी अवसरों में मौलिक हैं सभी अवसरों की नींव हैं, अधिक महत्वपूर्ण है या अन्य अवसरों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है या अधिक महत्वपूर्ण है?

हिन्दी के प्रसिद्ध मार्क्सवादी लेखक यशपाल के सुप्रसिद्ध उपन्यास के कथानक पर विचार करें तो उसमें एक पात्र है दिव्य जो निम्न वर्ण का है किन्तु अत्यन्त धनी है। धनी होने के बावजूद भी उसका पुत्र हमेशा सामाजिक समानता की तड़प में व्याकुल रहता है। वह कहता है -

"जन्म का अपराध? यदि यह जन्म का अपराध है तो उसका मार्जन किस

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्रकार संभव है ? धन की शक्ति, विद्या की शक्ति, अस्त्र की शक्ति - कोई भी शक्ति जन्म के अपराध का मार्जन नहीं कर सकती।"

उपन्यास - 'दिव्या'

उपर्युक्त पंक्तियों के आधार पर हमें यह समझना चाहिये कि हर व्यक्ति की परिस्थितियाँ भिन्न - भिन्न होती है। उसका जीवन दर्शन भी भिन्न प्रकार का होता है, उसके जीवन के लक्ष्य, आकांक्षाएँ, इच्छाओं में पर्याप्त व्यक्तिनिष्ठता विद्यमान होती है। इसी प्रकार व्यक्तियों के लिये असमानता के संदर्भ में भी मतों व रायों में भिन्नता होगी। यह भिन्नता इतिहास की शुरुआत से चली आ रही है।

मनुष्य के इतिहास के पन्ने पलटने पर पता चलता है कि प्रारंभिक समाज एक समतामूलक समाज था किन्तु जैसे-जैसे मानव विकास करता गया वैसे-वैसे समाज में सोपानक्रम का विकास होता गया। अन्य भेद जहाँ यूनान में अभिजात्यता - साधारण वर्ग का था, उनके मिथकों में अमर देवता व मरणशील मानव

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

का भी था; अरस्तु की नजर में स्वामी व दास का भी था तो पुरुष व नारी का भी था, वही भारतीय समाज में यह वर्णव्यवस्था के स्वरूप से परिवर्तित होकर जाति व्यवस्था के मॉडल के रूप में सामने आया जहाँ जाति के आधार पर खान-पान, रहन-सहन, व्यवसाय, विवाह, श्रमण आदि के सन्दर्भ में विभिन्न योग्यताएँ व नियोग्यताएँ निर्धारित कर दी गईं। यहाँ ध्यान देना आवश्यक है कि ये विभाजन आर्थिक आधार को मुख्य आधार न मानकर प्रमुख आधारों के एक भाग के रूप में मानते थे।

इतिहास में यदि सुधार आंदोलन भी हुए तो वे केवल आर्थिक स्तर पर समानता की बात नहीं करते थे। या यूँ कहें कि तत्कालीन सुधारों में सभी वर्गों, जातियों को समान दर्जा देने की बात कही गई। कबीर ने जहाँ - 'जाति - पाति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई' कहकर जातिगत व सामाजिक ~~स्थापना तथा~~ समानता स्थापित करने का प्रयास किया तो महात्मा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

बुद्ध ने धम्म में पुरुष व नारी दोनों को स्थान देकर लैंगिक स्तर पर अवसरों की समानता स्थापित की। इसी प्रकार तुलसी ने 'नहिं दरिद्र सम दुख जग माहिं' कहकर आर्थिक स्तर पर असमानता के प्रभावों का विश्लेषण किया तो 'सूरदास' जैसे भक्तों ने कृष्ण के प्रेम में हर गोपी को डूबाकर धार्मिक स्तर पर समतामूलक प्रेम की स्थापना की।

कुछ इसी प्रकार के सुधारों की शुरुआत पश्चिम में हुए पुनर्जागरण में दिखाई पड़ती है जहाँ के विचारकों ने सामंती व्यवस्था में व्याप्त विभिन्न बहु-आयामी भेदभावों को समाप्त करने का प्रयास कर आधुनिकता का सूत्रपात किया जो कि आगे चलकर जे.एस मिल के लेख 'सब्जेक्शन ऑफ वुमेन' तथा बेंथम जैसे विचारकों के 'उपयोगितावाद' सिद्धान्तों जहाँ 'हर व्यक्ति को एक गिना जाये' का दर्शन दिखता है, में तो समानता के तत्व विभिन्न स्तर तो दिखाई पड़ते ही हैं,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

यह भी दिखाई पड़ता है कि यहाँ पर आर्थिक असमानता को ही प्रमुख बाधा नहीं माना गया बल्कि इसे एक प्रकार मात्र ही माना गया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इसी क्रम में आगे बढ़ने पर औद्योगिकीकरण के साथ-साथ विश्व में व्यापार बढ़ने लगा तो नये पश्चिमी मूल्यों का एक सेट तैयार हुआ जिसकी चरम परिणति हमें आज के वैश्वीकृत, उदारीकृत, निजीकृत विश्व में भौतिकवाद व व्यक्तिवाद के चरम उफान में नज़र आती है। यहाँ के विकास का मॉडल अधिक उपभोग को ही विकास का पैमाना मानता है और अधिक उपभोग होता है- अधिक द्रव्य, धन एवं दौलत से। आज के समय में पैसा खुदा तो नहीं है किन्तु खुदा से कम भी नहीं है; पैसा बोलता है; जैसे विचार आधुनिक पीढ़ी के मस्तिष्क में सर चढ़कर बोलते हैं। इसी कारण आर्थिक असमानता को ही असमानता के प्रमुख उपकरण के रूप में देखा गया। 'मार्क्स' ने

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

अपनी पुस्तक 'दास कैपिटल' में आर्थिक पक्ष को संपूर्ण पक्षों में मूलभूत माना है तो 'थॉमस पिकेटी' ने भी अपनी हालिया पुस्तक 'कैपिटल इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' में पूंजीवाद व असमानता का विवेचन आर्थिक पंच पर कर इसे लोकतंत्र हेतु खतरा बताया है। किन्तु यह भी सर्वज्ञात है कि मार्क्स के सिद्धान्तों पर बना सोवियत संघ भी बिखर गया क्योंकि वहाँ आर्थिक समानता के प्रयास तो हुए किन्तु राजनैतिक स्वतंत्रता व अवसरों को दबाया गया।

विचार करने योग्य बात यह भी है कि भारतीय समाज व अन्य समाजों में भी हमेशा से आर्थिक तत्व को उतना महत्व नहीं मिला जितना आज मिला है। भारत में प्राचीन समय में 'अर्थ तत्व' की उपेक्षा की जाती थी व 'धर्म' व 'मोक्ष' तत्व पर अधिक बल दिया जाता है। हजरत मोहम्मद ने भी ईश्वर की नज़र में पुरुष, नारी व स्त्री को एक समान

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

बताकर समतामूलक समाज की स्थापना करने का प्रयास किया। गुरुनानक जी के 'सच्चा सौदा', 'लंगर व पंगत' जैसे सिद्धान्त वर्गभेद को मिटाकर जातिगत समानता की बात करते हैं। आगे चलकर महात्मा गांधी ने 'आध्यात्मिक विकास' को प्रमुख लक्ष्य घोषित किया व स्वधर्म के अनुसार जीवन के अवसरों की सृजना को प्रमुख बल दिया जहाँ हर धर्म, लिंग, वर्ग समान रूप से कार्य करें।

अन्य पक्षों के रूप में कुछ उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है कि केवल आर्थिक असमानता से अवसरों की असमानता अधिक तीव्र होती है जैसे - संयुक्त राष्ट्र संघ के 'मानव विकास सूचकांक' के तीन आयामों में प्रतिव्यक्ति आय को एक तिहाई भागीदारी दिया गया है जबकि शिक्षा व स्वास्थ्य को शेष दो तिहाई। बहुआयामी गरीबी सूचकांक में भी आर्थिक पक्ष का महत्व उतना नहीं है। यदि रोजगार, शिक्षा, बिजली, पानी आदि अवसरों को

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रदान किये बिना केवल आर्थिक दर बढ़ायी जाये तो इससे केवल आँकड़े ही बढ़ेंगे, वास्तविक विकास नदारद ही रहेगा।

जहाँ तक न्याय की संकल्पना का प्रश्न है वहाँ भी न्याय व समता के लिये 'विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया' यह तय करती है कि समान के साथ समान व्यवहार होना चाहिये तथा असमान के साथ असमान व्यवहार। संविधान में मूल अधिकारों के अनुच्छेद 15, 16, 17 केवल आर्थिक असमानता दूर न कर सामाजिक असमानता को मिटाने की भी वकालत करते हैं। राज्य के नीति निर्देशक तत्व भी आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक न्याय पर बल देते हैं तो वही दूसरी ओर अनुच्छेद 324 व 325 राजनैतिक मताधिकार प्रदान कर राजनैतिक समानता प्रदान करने का प्रयास करता है।

अंतिम रूप से यही कहा जा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

सकता है यदि संपूर्ण अवसरों की असमानता एक वृक्ष है तो आर्थिक असमानता जिसे आर्थिक अवसरों की असमानता भी कहा जा सकता है, उस वृक्ष की एक शाखा मात्र ही है। दोनों ही स्तर अत्यन्त विनाशक हैं जो हमारे मानव जीवन, हमारी सभ्यता - हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों के समक्ष चुनौती उत्पन्न करते हैं। हमारा प्रयास यही रहना चाहिये कि वर्गीय, लैंगिक, सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक सभी स्तरों पर असमानता का निवारण किया जाये क्योंकि एक दलित के लिये धन के बजाय सामाजिक स्वीकृति व पहचान की लालसा अधिक मायने रखती है तो एक महिला के लिये स्वतंत्रता व पुरुष के समक्ष समानता स्वर्णाभूषणों से अधिक महत्व रखते हैं। अतः कुल मिलाकर जीवन की सार्थकता के लिये आर्थिक असमानता के साथ-साथ अवसरों की विभिन्न

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्तरों पर समता भी आवश्यक है। जैसा कि दिनकर ने कहा भी है –

"जब तक मनुज - मनुज का
सुख भाग नहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल
रण नहीं कम होगा"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–B / SECTION –B

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।

   "The unexamined life is not worth living".

2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।

   The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.

3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज़्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।

   The hands that serve are holier than the lips that pray.

4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

   Religion without ethics is like a body without soul.

"प्रार्थना करने वाले होंठ से ज़्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं"

अभी कुछ समय पहले अखबार में एक खबर छपी थी कि रमजान के पवित्र माह में एक मुस्लिम व्यक्ति रोजा रखे हुए था। सर्वविदित है कि इस्लाम धर्म में रोजा रखकर, अपने शरीर को कष्ट पहुँचाने का उद्देश्य ईश्वर को प्रसन्न करना ही होता है। किन्तु उस परिस्थिति में भी एक मुस्लिम व्यक्ति ने अपना रोजा इस कारण तोड़ा क्योंकि उसे एक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को समाधान करना था।

सुनने में भले ही यह छोटी सी घटना लगे किन्तु यहाँ बल इस बात पर है कि पुण्य व पाप के पैमाने क्या हैं। यदि वह व्यक्ति चाहता तो एक अनजान व्यक्ति की मदद न कर अपने उपवास को जारी रख सकता था, किन्तु यहाँ दूसरे की मदद का सवाल था तो उसने अपनी इबादत व अपनी प्रार्थना से समझौता करते हुए मदद के लिये आगे आया व हाथ बढ़ाये।

मोहम्मद हजरत साहब ने स्पष्ट कहा है कि अगर तुम नमाज पढ़ने जा रहे हो और अगर किसी को तुम्हारी मदद की ज़रूरत है तो सबसे पहले तुम्हें ज़रूरतमंद की मदद करनी चाहिये।

केवल इस्लाम की बात नहीं है विश्व के हर धर्म में परोपकार को प्रार्थना से ऊपर तरजीह दी गई है। उदाहरण

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

के लिये प्राचीन भारत के पुराणों, में अनेक ऋषियों का नाम आता है जिन्होंने ईश्वर प्राप्ति के लिये कठोर तपस्याएँ की, किन्तु ऋषि दाधिचि को आज भी जानने वाले लोग अधिक है क्योंकि उन्होंने राक्षसों के संहार के लिये अपनी जान कुर्बान कर दी, अपनी अस्थियों का दान देवताओं को कर दिया। इसी प्रकार हनुमान को शक्ति में शिरोमणि इसीलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने केवल निष्क्रिय भक्ति नहीं की बल्कि राम की मदद के लिये हरसंभव प्रयास किये। सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक देव जी भी अपने शिष्यों को भगवान की भक्ति व अरदास के साथ-साथ 'जनोपयोगी कार्य' करने पर बल देते थे-

"नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत दा भला।"

इसी प्रकार की परिकल्पना गीता हो या

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

जैन व बौद्ध धर्म के ग्रन्थ हो, में की
गई है। गीता में तो कर्म सिद्धान्त पर
बल दिया गया है। अच्छे कर्मों की
कसौटियों में ईश्वर वंदना के साथ-२
साथ मानव सेवा पर भी पर्याप्त बल
दिया गया है। जैन बौद्ध धर्म में भी
अहिंसा, औचार्य जैसे तत्व दूसरों व
स्वयं की भलाई के लिये ही है। सारांश
रूप में संस्कृत का यह श्लोक तो समस्त
धर्मों का निचोड़ यहाँ प्रस्तुत कर देता है।

"अष्टादस पुराणेषु, व्यासाय वचनद्वयम,
परोपकाय पुण्याय, पापाय परपीड़नम"

इस विषय पर इतिहास व आधुनिक
समाज का और अधिक विश्लेषण करने
पर हम पाते हैं कि प्राचीनकाल में
परोपकार पर अत्यन्त बल दिया जाता था,
दूसरों की भलाई के कार्य करने को एक
अच्छा कर्म माना जाता था किन्तु उस
समय में ईश्वर का स्थान मानव के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

स्थान से नहीं ऊपर था। यूनानी मिथकों के देवता ज्यूज (Jews) तो भारतीय मिथकों में इन्द्र जैसे देवता द्वारा मानवों को उनकी भक्ति न करने पर सबक सिखाते भी नज़र आते हैं। ईसाई व इस्लाम धर्म में भी ईश्वर को दयालु व न्यायप्रिय कहा गया किन्तु वहाँ भी मानव का स्थान ईश्वर के समक्ष कमज़ोर या न के बराबर ही रहता था। कई सदियों पश्चात् पश्चिम में 'पुनर्जागरण' के आगमन के पहले तक ईश्वर व चर्च की सत्ता पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता था। किन्तु पुनर्जागरण के समय हुई बौद्धिक व वैचारिक हलचलों, वैज्ञानिक प्रयोगों तथा आगे चलकर देकार्त के बुद्धिवाद एवं फ्रांसिस बेकन के अनुभववाद से आधुनिकता के गर्भ से आधुनिकता का जन्म हुआ और यहाँ मानव-ईश्वरीय संबंधों की समस्त कसौटियाँ ही बदल गईं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

आधुनिकता के मूल्य परलोक के बजाय इहलौक को महत्व देते हैं; मानव को जगत के केन्द्र में रखते हैं; मानव-तावाद व मानवता को महत्व प्रदान करते हैं तथा साथ ही मानव की प्रगति करने की क्षमता में भरोसा रखते हैं।

यदि इस प्रकार की कसौटियों पर जीवन को परखा जाये तो हम सहजता से कह सकते हैं कि मानव-मात्र की सेवा ही जीवन को सार्थक बनाने व अच्छे कर्मों का उच्चतम पैमाना है। आधुनिक काल के धर्मसुधारकों व समाज-सुधारकों ने मानव को साध्य मानते हुए धर्म में सुधार किये। राजा राममोहन राय ने स्त्रियों को सती होने से रोकने के लिये आजीवन संघर्ष किया तो ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे व्यक्तियों ने मानव की शिक्षा (मुख्यत: स्त्री शिक्षा) पर बल दिया व विधवाओं के कल्याण हेतु

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

अधिनियम पारित करवाए। यहाँ पर मुहम्मद इकबाल जैसे मानववादी विचारक भी हुए तो महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर व विवेकानंद जैसे महापुरुष भी जो संपूर्ण विश्व के कण-कण को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानते थे एवं मानव की सेवा को ईश्वर की सेवा का दर्जा प्रदान करते थे। इसी समय के महाकाव्य 'कामायनी' में "प्रसाद' ने कहा भी है-

"औरों को हंसते देखो मनु
हंसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।"

इसी प्रकार मैथिलीशरणगुप्त जी के राम भी 'संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया, मैं भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया' कहकर इहलौक की व मानव की महत्ता स्थापित करते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

अब प्रश्न आता है कि यदि दूसरों की मदद करने वाले हाथ प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र होते हैं तो प्रार्थना वाले होठों की भूमिका क्या है? इस प्रश्न का माकूल उत्तर यह हो सकता है कि अनेक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार हमारे मनोभाव परस्पर जुड़े हुए होते हैं और हमारे समस्त अच्छे कर्मों का प्रभाव दूसरे व्यवहारों पर पड़ता है तो हमारे आंतरिक मूल्यों का प्रभाव हमारे कर्मों पर पड़ता है।

कोई भी प्रार्थना व्यक्ति को भौतिक पदार्थों की उपलब्धता चाहे न कराये, चाहे उसका पेट न भरे किन्तु यह व्यक्ति को व्यक्ति की तरह जीना सीखाती है। महात्मा गांधी जब "वैष्णव जन तो तेने कहिये" जैसी प्रार्थना करते थे तो इसका प्रभाव उनके व्यवहारों पर भी-पूर्णतः दिखलायी पड़ता था। प्रार्थना ईश्वर के प्रति भी हो सकती है एवं

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्राणिम प्राणिमात्र के प्रति या धर्मनिरपेक्ष भी। अगर यह प्रार्थना ईश्वर के प्रति की जाये तो भक्त में आत्मविश्वास पैदा करती है एवं उसे भावनात्मक रूप से मजबूत बनाती है जिससे वह अच्छे कर्मों की ओर प्रेरित करती है। कबीरदास जैसे भक्तों में अक्खड़ता, अमायिकता व संसार की बुराईयों के प्रति आक्रमण के साथ-साथ प्रचण्ड आत्मविश्वास इसी कारण दिखलाई पड़ता है क्योंकि उन्हें अपने ईश्वर पर अत्यन्त विश्वास था। उनके एक दोहे में यही भाव जागृत होता है-

"साईं के सब जीव हैं,
कीरी कुंजर दोय"

इसी प्रकार के अच्छे कर्मों की प्रेरणा तुलसी, जायसी (सूफी) जैसे भक्तों ने अपनी प्रार्थना के ज़रिये निकाली जो अन्तत: प्राणिमात्र के कल्याण हेतु ही लिखी गई दिखाई पड़ती है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

इसी प्रकार की एक प्रार्थना प्राणिमात्र के प्रति भी हो सकती है जो कि या तो किसी दीन व्यक्ति के द्वारा सहायता हेतु की जाये जैसे कोई अन्याय से पीड़ित व्यक्ति न्यायालय में प्रार्थना करे। या फिर वह एक समर्थ व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों से भले कार्य करने हेतु की जाये। दोनों ही प्रकार की प्रार्थनाओं में प्रेरणा की शक्ति विद्यमान होती है जिसका अन्तत: परिणाम जनकल्याण व समाजकल्याण के साथ-साथ स्वकल्याण भी होता है।

अन्तत: यही कहा जा सकता है कि इस बात में तो कोई दोराय नहीं है कि मदद करने वाले हाथ प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र होते हैं किन्तु इस प्रकार की तुलना में अधिक सर खपाने के बजाय दोनों

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

के आनुपातिक महत्व को ही स्थापित किया जाना चाहिये। मूलतः उद्देश्य की भिन्नता के लिये दोनों उपादानों का प्रयोग किया जाता है - दूसरे की भलाई का या फिर प्रार्थना का। किन्तु कई कार्य ऐसे भी हैं जिन्हें करने के लिये प्रार्थना से प्रेरणा मिलती है। इस प्रकार दोनों में कारण - कार्य संबंध भी स्थापित किया जा सकता है। अन्ततः कई कार्य ऐसे भी हैं जो कि दोनों से प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिये आंतरिक शांति ऐसा लक्ष्य है जो दोनों से प्राप्त होता है। चाहे एरिक फ्रॉम जैसे मनोवैज्ञानिक हो या कुँवर बेचैन जैसे शायर - दोनों ने परोपकार को मानसिक अशांति को दूर करने का माध्यम बताया है। यही कार्य प्रार्थना भी करती है। कुंवर बेचैन ने कहा भी है -

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

"तुम्हारे दिल की चुभन ज़रूर कम होगी
किसी के पाँव का काँटा निकालकर तो देखो।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation